देवेश पथ सारिया

द्वारा–सरोज शर्मा, माडा योजना हॉस्टल, पोस्ट ऑफिस
के पास राजगढ़ (अलवर), राजस्थान– 301408

संपर्क

कभी-कभार के छिटपुट जवाबों पर
जुड़े रह गए थे तार
जैसे आधी टांगें तुड़वाया हुआ चींटा
छिन्न-भिन्न, औंधा पड़ा हुआ
संजोये हुए त्वरा की स्मृति
चलाता रहता है
बचे हुए अपने पाँव हवा में

फिर मैंने कहा एक दिन,
कि करते हैं किसी दिन बातचीत तफसील से
बिल्कुल पुराने समय की तरह
बताना जब भी हो समय तुम्हारे पास, पर्याप्त

उस दिन
सारी टांगें टूट गईं चींटे की

मिट्टी

ताओयुआन एयरपोर्ट से लगेज बैग लेकर
ज्यांगोंग रोड स्थित अपने नये ठिकाने पर आकर
सामान की जांच करने पर मैंने पाया
सही सलामत बैग में रखे पहुंच गये कपड़ों, तेल, मसालों के साथ
बैग के बाहर के उपेक्षित हिस्से में रखे चले आए थे
पुराने जूते
रखते समय, मैं झटकारना भूल गया था
उनके सोल में लगी बरसाती मिट्टी

उस मिट्टी के वहाँ रह जाने में
मेरी लापरवाही का प्रमाण था
फिर मैंने ध्यान दिया कि
मिट्टी के कणों में
मैं अपने साथ ले आया था
अगस्त की बारिश
उत्तराखंड से राजस्थान की बरसाती यात्रा
थोड़ा सा उत्तराखंड, थोड़ा सा राजस्थान
थोड़ा सा हिमालय, थोड़ी सी अरावली
संभव है, कुछ अंश दिल्ली का होना भी

चूंकि मिट्टी जूतों पर थी
मैंने दोहराई
नानाजी की सिखाई प्रातःकालीन क्षमा प्रार्थना
पादस्पर्शं क्षमस्व मे
मिट्टी को झड़कार कर बटोरा
और संभालकर रख दिया
ग्यारहवीं मंजिल के अपने कमरे की अलमारी में

हर प्रवासी अपने-अपने प्रतीकों में सुरक्षित रखता है देश
सबके भीतर एक सहमा हुआ बहादुर शाह ज़फर बैठा है
जो अंत में लौट आना चाहता है अपने वतन
होने को राख या दफन

थोड़े से अन्न-पानी का उन्माद खींच लाता है
प्रवासी पक्षियों को विदेश
वे वहाँ बस जाने नहीं आते
मर जाने तो कतई नहीं